प्रोफ़ेसर अल्लामा सै0 अली मुहम्मद नक़वी की पुस्तकें और शोध-लेख

मु0 र0 आबिद

मौलाना सै0 अली मुहम्मद नक़वी (जन्म 1 जनवरी 1953) का एक जीवन परिचय पिछले अंक में दिया गया। यहाँ उनकी पुस्तकें शोध–लेखों का संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है। ज्ञान और लेखनी उनकी पैत्रिक सम्पत्ति है जो गुफ़राँमॉब से अटूट क्रम से उन तक पहुँची।

उनकी पहली रचना शायद ''पाँच किरनें'' है जो 18 साल की आयु में लिखी गई और 1972 में अल्लामा कामूनपूरी की भूमिका के साथ प्रकाशित हुई। रचना के अपने पहले चरण में उन्होंने 'आमदनामा' (फारसी व्याकरण), नहवे मीर (अरबी व्याकरण), मीज़ान (अरबी व्याकरण), मुन्शइब (अरबी व्याकरण) की व्याख्याएँ लिखीं। इस प्रकार तर्कशास्त्र (Logic) और दर्शनशास्त्र से भी सम्बन्धित व्याख्याएँ लिखीं।

मौलाना की महत्वपूर्ण कृतियाँ निम्नलिखित हैं, जो ज़्यादातर प्रकाशित हो चुकी हैं:–

1– कुर्आन मजीद की तफ़सीर (व्याख्या)

The Meaning of the Holy Quran (I) IIDE Publications, New Delhi, 2000/Rep.2005

मौलाना के नवीनतम लेखन व्यास्तता का पहला भाग है। इसमें कुर्आन मजीद के पहले पारे का अनुवाद और तफ़सीर है। साथ में कुर्आन मजीद के अरबी आलेख को अंग्रेज़ी (रोमन) लिपि में भी बदला गया है। इस Transliteration के लिए उन्होंने नयी पद्धति विकसित की है। मौलाना डा0 कल्बे सादिक़ के शब्दों में यह अनुवाद न तो ज़्यादा 'स्वतंत्र' है और न ज़्यादा 'शाब्दिक' है। इसका केन्द्रीय विचार कुर्आन को एक मार्गदर्शक ग्रन्थ के रूप में प्रस्तुत कर निजी और सामाजिक जीवन के लिए कार्यत्मक मार्गदर्शन का पाठ देना है।

2– उसवए जावेद (फारसी) बुन्यादे शहीद, ईरान 1362 हि0 श0 / 1983–84 ई0

रसूल (स0) और मासूम इमामों (अ0) के जीवन–चरित्र की प्रस्तुति है। इसमें लेखक ने अपना विचार दिया है कि जिस तरह तफ़सीर को एक नियमित ज्ञान के रूप में विकसित किया गया उसी तरह मासूमों (अ0) के जीवन व चरित्र के अध्ययन करने, समझने के लिए उसे एक नियमित शास्त्र के रूप में विकसित करने की ज़रूरत है। इस प्रस्तावित शास्त्र को 'तफ़सीर–उस–सीरह' का नाम दिया गया है। इस शास्त्र को सिर्फ ऐतिहासिक विवरण पर केन्द्रित न करना चाहिए बल्कि इन पाक जीवनों के अध्यन्न एंव विश्लेषण और उनसे मार्ग पाने व सीख लेने पर केन्द्रित करना चाहिए। इस पुस्तक के द्वारा लेखक ने अपने विचारों को कर्यान्वित किया है।

3– जामिआ शिनासीए ग़र्बगराई (फारसी) भाग–1, अमीरे कबीर पब्लिकेशन, तेहरान 1362 हि0 श0 / 1983–84 ई0।

4– जामिआ शिनासीए ग़र्बगराई (फारसी) भाग–2, अमीरे कबीर पब्लिकेशन, तेहरान 1363 हि0 श0 / 1984–85 ई0।

दो भागों में प्रकाशित इस शोध रचना में मुस्लिम समाजों के पश्चिमीकरण (Westernization) की समाज–शास्त्रीय समीक्षा है। पहले भाग में

मुस्लिम समाजों के पश्चिम–सत्कार (पश्चिमी शिक्षा पद्धति और टेकनालॉजी अपनाने) का इतिहास और उसके विभिन्न चरणों का गहरा अध्यन्न है। दूसरे भाग में मुस्लिम समाज, पिरिवार (Family), मूल्यों, संस्कृति और राजनैतिक संस्थाओं पर पश्चिम के प्रभाव का विश्लेषण है। लेखक ने निम्न चरणों को सांकेतिक किया हैः–

(क) पश्चिम–सत्कारः पहले चरण में मुस्लिम समाज पश्चिमी शिक्षा पद्धति और उनकी टेकनालॉजी अपनाता है।

(ख) पश्चिमीकरणः दूसरे चरण में पश्चिम–सत्कार की ओर झुकाव अपनी जड़ें पूरी तरह जमा लेता है और समाज पश्चिम–भक्ति और पश्चिम के अन्धे अनुकरण में ग्रस्त हो जाता है।

(ग) आत्म–ज्ञान / 'स्वयं' की पहचानः तीसरे चरण में 'स्वयं' की ओर प्रगतिशील वापसी होती है या आत्मज्ञान होता है। इसका उदाहरण अफ़गानी अब्दुह, अल्लामा 'इक़बाल', मौलाना अबुलकलाम 'आज़ाद', शहीद मुतह्हरी और डा0 अली शरियती हैं।

यह एक अनुसरणीय समीक्षा है। इसी तरीक़े से दूसरे धर्म और समाजों के सम्बन्ध से भी समीक्षा की जा सकती है।

5 से 8– जामिआ शिनासी आमोज़िशी (फारसी), शिक्षा मंत्रालय, ईरान 1–4 क्रमानुसार 1361 हि0 श0 (1982–83), 1362 हि0 श0 (1983–84), 1363 हि0 श0 (1984–85), 1363 हि0 श0 (1984–85)

समाजशास्त्र की पाठ्य–पुस्ताकों का क्रम है। इनमें समाजशास्त्र के महत्वपूर्ण मुद्दों के बारे में इस्लामी दृष्टकोण पता लगाने का एक प्रयास है। धर्म के समाजशास्त्र पर यह महत्वपूण और उदाहरणीय रचना–कार्य है। इस पाठयक्रम में इस्लामी दृष्टिकोण से धर्म का समाजशास्त्र विकसित करने का प्रयत्न है। इन पुस्तकों को ईरान के शिक्षा मंत्रालय ने देश भर के कक्षा IX, X, XI एवं यूनिवर्सिटी स्तर के B.Ed. के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया है। यह वह सम्मान है जो किसी पहले अ–ईरानी व भारतीय को दिया गया।

9– अल–इत्जाहुल ग़र्बी (अरबी) तेहरान।

पुस्तक 'जामिआ शिनासी गर्बगराई, का अरबी अनुवाद है।

10– इस्लामी विश्वासों और कर्मों की हस्तपुस्तिका (अंग्रेज़ी)

A Mannual of Islamic Beliefs and Practice Mohammad Trust of Great Birtain and Northern Ireland, London, 1990 (PP.256)

धर्म विश्वासों और धर्म–सम्बन्धी कर्मों का संक्षिप्त परिचय है जिसे मुहम्मदी ट्रस्ट ने लन्दन से प्रकाशित किया है। नवीनता की प्रस्तुति है। इसमें लेखक ने धर्मशास्त्र के परम्परागत अध्याय प्रणाली से अलग हटकर अपने से निम्नलिखित श्रेणियों में बाँटा हैः–

1– धर्म विश्वास

2– आचार (आचरण व मूल्य)

3– शिष्टाचार (निजी या व्यक्तिगत)

4– सामूहिक / सामाजिक शिष्टाचार (सभ्यता)

5– धर्म–प्रथा / रीति (जैसे अक़ीक़ा, निकाह आदि)

6– भक्ति (नमाज़, रोज़ा, हज आदि)

इस श्रेणीकरण के पीछे सुव्यवस्थित सुनियोजित ढंग और वैज्ञानिक सोच है।

11– सैरी दर अन्देश–ए–दीनी हिन्द (फारसी) शीघ्र प्रकाशित होने को

लगभग 1800 पृष्ठों पर आधारित दो भागों में यह शोध कृति तुलनात्मक धर्म अध्यन्न को समर्पित है। इसमें भारतीय धार्मिक विचारों के विकास की एक परिकल्पना प्रस्तुत की गई है।

लेखक के विचार में मानव अपनी प्रकृति से एक ऐसे परमात्मा यथार्थ की खोज करता है जो पूर्णतम सौन्दर्य, शक्ति और जीवन जैसी विशेषता वाला हो। लेकिन अन्धेरे में इस यथार्थ को टटोलने में या ढूँढन में आदमी विभिन्न चरणों पर अग्रसर हुआः

(1) पहला चरणः– मूल सिद्धान्त प्रकृति–भक्ति है, इसमें उपासना भजन, गीत है, यहाँ कवि (भजन–कार) का बोलबाला है।

(2) दूसरा चरणः– मूल सिद्धान्त प्राण–भक्ति (Animism) है इसमें पूजा–प्रथा जादू है, यहाँ जादूगर या तान्त्रिक सर्वोपरि है।

(3) तीसरा चरणः– मूल सिद्धान्त सगुणभक्ति है। धर्म–प्रथा मूर्तिपूजा है। यहाँ पुजारी ऊपर है।

(4) चौथ चरणः– मूल सिद्धान्त निगुर्णभक्ति, ऐकेश्वरवाद है। धर्म–प्रथा एक ईश्वर की भक्ति है। यहाँ धर्मगुरु (आलिम) सर्वोच्च है।

(5) पाँचवां चरणः– मूल सिद्धान्त सूफ़ीवाद/भक्तिवाद है, या सम्पूर्ण एकेश्वरवाद है। धर्म–प्रथा प्रार्थना के अतिरिक्त भक्ति साधना है। यहाँ साधु (आरिफ़) सर्वोपरि है।

12– इस्लाम व मिल्ली गराई (फारसी), दफतरे नश्रे फरहन्ग इस्लामी, तेहरान 1360 हि0 श0 (1981–82)

☐ अल–इस्लाम वल क़ौमियह (अरबी अनुवाद) साज़माने तब्लीग़ाते इस्लामी, तेहरान 1404 हि0 (1983–84)

☐ L, Islam et le Nationalisme ou le Nationalisme selon l' Islam (फ्रांसीसी अनुवाद) Organization pour la propagandee Islamique.

☐ Islam and Nationalism (अंग्रेज़ी अनुवाद) Islamic Propagation Organization, Tehran.

☐ Islam ve Milliete Cilic (तुर्की अनुवाद) Islami Teblig Te Kilati.

☐ Eslaam wa milliete Khwaazee. (कुर्दी अनुवाद)

'इस्लाम और पश्चिम की राष्ट्रीयता' के विषय पर एक अनोखी पुस्तक है। कई अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओं में मूल फारसी पुस्तक के अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं।

इसका केन्द्रीय विचार हैः– राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रभक्ति प्राकृतिक बात है और यह मानवीय प्रकृति का एक हिस्सा है। इसे इस्लाम ने माना है और इसका प्रबल आवाहन भी किया है। लेकिन पुनर्जागरण (Renaissance) के बाद पश्चिम ने ईश्वर और धर्म को नकारा जिससे आन्तरिक व बाह्य शून्य पैदा हो गया क्योंकि इन्सान ईश्वर या धर्म के किसी न किसी प्रकार के विश्वास के बिना नहीं रह सकता। इसलिए पश्चिम को नया धर्म, नया ईश्वर बनाने की ज़रूरत हुई। 'राष्ट्रीयता' जैसा कि पश्चिम में प्रचलित की गई वह इसी आन्तिरक सामाजिक ज़रूरत के पूरा करने को एक बनावटी धर्म (Pseudo-religion) था। इसने रंग, भाषा, जाति, इतिहास आदि का वर्चस्व बनाया। नतीजे में दो विश्वयुद्ध थे।

इस्लाम ने देशभक्ति, राष्ट्रप्रेम पर बल दिया लेकिन यह झूठे खुदा, अवतार और बनावटी धर्म को स्वीकार नहीं कर सकता।

13– इस्लामी शब्दकोष (अंग्रेज़ी)

A Dictonary of Islamic Terminology, Islamic Publication, Tehran 1364H (sh.) /1985-86

यह इस्लामी शब्दावली का शब्दकोष है।

14– इिदियालोजी इंक़िलाबी 'इक़बाल' (फ़ारसी), इन्तिशाराते इस्लामी, ईरान 1986

अल्लामा 'इक़बाल' के धार्मिक विचारों और उनकी 'ख़ुदा' व 'ख़ुदी' ('ईश्वर', 'स्वयं') की परिकल्पना का परिचय कराया गया है। इससे लेखक ने ईरान को एक तरह से 'इक़बाल' के

धार्मिक विचारों से परिचित कराया है।

15– शिगोफ़ई इन्क़िलाबी इस्लामी दर मिस्र

अरब दुनिया ख़ासकर मिस्र (Egypt) में इस्लामी क्रान्ति के बीजारोपण का विस्त्रित अध्ययन है। पुस्तक मिस्र में जमालुद्दीन अफ़ग़ानी के समय से मुस्लिम आन्दोलन के आरम्भ की बात करती है। इसमें आधुनिक मुस्लिम आन्दोलनों के उभरने और उनकी सैद्धान्तिक विशेषताओं का अवलोकन किया गया है। यह वास्तव में एक पूरा सिद्धान्त प्रस्तुत करने का प्रयास है। इसे लेखक ने आन्दोलन–शास्त्र (Movementology) का नाम दिया है। इसका केन्द्रीय विचार यह है कि धर्म की समाजिकता दर्शाती है कि धार्मिक आन्दोलनों के बारे में हर धर्म अपने ख़ास विचार रखता है। इस प्रस्तुति में इस्लामी परिपेक्ष में आन्दोलनों को सुन्नती (पारम्परिक) तजदीदी (पुनर्जीवनदायीः– परम्परा तोड़कर मूल स्रोत की ओर पलटने के आन्दोलन) और तजद्दुदी (आधुनिकतावादीः– आधुनिक पश्चिमी विचारों के अनुसार धर्म को नये अर्थ देने वाले) श्रेणियों में बाँटा है। लेखक के अनुसार हिन्दु, ईसाई और दूसरे मतों के धार्मिक आन्दोलनों के विश्लेषण के लिए इसी विभाजन को धर्म के समाजशास्त्र के नये उपकरण के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

16– नज़रियाते इक़बाल दर सीस्तमे आमोज़िशी व फरहन्गे इस्लामी (इस्लामी संस्कृति और शिक्षा पद्धति के बारे में 'इक़बाल' के विचार)

उपरोक्त पुस्तकों के अलावा सौ से अधिक शोध–लेख प्रकाशित हो चुके हैं जिनमें कुछ ये हैं:–

☐ मुतह्हरी– समकालीन ईरानी इस्लामी चिन्तक (दैनिक जमहूरी इस्लामी 24 नवम्बर 1980)

☐ इस्लाम के सेकुलर व धार्मिक ज्ञान का एकीकरण (दैनिक जमहूरी इस्लामी 16 दिसम्बर 1980)

☐ शीआ इस्लाम के समकालीन प्रचार में तबातबाई का योगदान (दैनिक जमहूरी इस्लामी 24 दिसम्बर 1980)

☐ पश्चिमी गणतन्त्र के प्रति समकालीन इस्लामी व्यवहार (दैनिक जमहूरी इस्लामी 31 मार्च 1983)

☐ इमामत का शीई विश्वास और उसके राजनैतिक उपक्रम (दैनिक जमहूरी इस्लामी 22 नवम्बर 1980)

☐ शीआ इमामों के जीवन के राजनैतिक तत्व (दैनिक जमहूरी इस्लामी 7 जुलाई 1980)

☐ इमामे जाफ़र सादिक़ (अ0) और शीआ मत (व धर्म विधिशास्त्र) के नियमीकरण में उनका योगदान (दैनिक जमहूरी इस्लामी 1 जनवरी 1981)

☐ मुस्लिम राजनैतिक विचार में इस्लामी समुदाय के एकता का सिद्धान्त (दैनिक जमहूरी इस्लामी 9, 10, 11 जनवरी 1981)

☐ समकालीन ईरानी समाज में पश्चिमी पूर्वशास्त्रियों का रोल (दैनिक जमहूरी इस्लामी 1 मार्च 1981)

☐ पारम्परिक इस्लामी शिक्षा पद्धति पर पश्चिमी प्रभाव के कुछ रूप (दैनिक जमहूरी इस्लामी 5 जनवरी 1982)

☐ पश्चिम के चैलेन्ज का इस्लामी जवाबः तीन चरण (दैनिक जमहूरी इस्लामी 31 अगस्त, 3, 6, 12, 14 सितम्बर 1980)

☐ डा0 अली शरीअती और 'इन्सान' ('मानव') का उनका विचार (दैनिक जमहूरी इस्लामी 22 जून 1981)

☐ इस्लाम को एक गतिशील राजनैतिक विचारधारा के रूप में प्रस्तुत करने में मुतह्हरी का योगदान (दैनिक जमहूरी इस्लामी 2 अप्रैल 1983)

☐☐☐